अध्याय 02

सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

(प्रेम प्रकृति की शोभा है)

इस अध्याय में...

- पाठ का हिन्दी अनुवाद
- शब्दार्थाः
- चैप्टर प्रैक्टिस

पाठ का हिंदी अनुवाद

1. वनस्य दृश्यं समीपे एवैका नदी वहति। एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनाति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति निद्राभङ्गदुःखेन वनराजः सन्नपि तुच्छजीवैः आत्मनः एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजन्तून् दृष्ट्वा पृच्छति।

शब्दार्थः* धुनाति/धूनोति** – गृहीत्वा आंदोलयति (पकड़कर घुमा देता है), **प्रहर्तुमिच्छति** – गृहीतुमिच्छति (पकड़ना चाहता है), **वृक्षमारूढः** – तरवामारूढः (वृक्ष पर चढ़ जाता है), **क्रुद्धः** – क्रोधित (क्रोधित होकर), **कर्णमाकृष्य** – श्रोत्रं कर्षयित्वा (कान खींचकर), **तुदन्ति** – अवसादयन्ति (तंग करते हैं), **इतस्ततः** – इतः ततः च (इधर-उधर), **कर्तुं** – कुर्वाणं (करने में), **हर्षं** – प्रसन्नं (प्रसनता), **कलरवम्** – पक्षिणां कूजनम् (चहचहाहट को), ***निद्राभङ्गेन – सुजि भंजेन (नींद टूट जाने से), **सन्नपि** – भवन्नपि (होते हुए भी)।

अनुवाद वन का दृश्य है, पास ही एक नदी बह रही है। एक शेर सुख से विश्राम कर रहा है तभी एक बंदर आकर उसकी पूँछ को पकड़कर घुमा देता है। क्रोधित होकर शेर उसे पकड़ना चाहता है, लेकिन बंदर कूदता हुआ वृक्ष पर चढ़ जाता है। तभी दूसरे वृक्ष से कोई दूसरा बंदर शेर का कान खींचकर पुनः वृक्ष पर चढ़ जाता है। इस प्रकार बंदर बार-बार शेर को तंग करते हैं। क्रोधी शेर इधर-उधर दौड़ता है और गर्जना करता है, लेकिन कुछ भी करने में समर्थ नहीं होता है। बंदर यह देखकर हँसते हैं तथा वृक्षों पर विभिन्न पक्षी भी शेर की ऐसी दशा को देखकर प्रसन्नतायुक्त चहचहाहट (कलरव) करते हैं। नींद टूट जाने से दुःखी जंगल का राजा होते हुए भी तुच्छ जीवों के समान अपनी ऐसी बुरी स्थिति को देखकर वह (शेर) सभी जंतुओं से पूछता है।

2. **सिंहः** (क्रोधेन गर्जन्) भोः! अहं वनराजः किं भयं न जायते? किमर्थं मामेवं तुदन्ति सर्वे मिलित्वा?

एकः वानरः यतः त्वं वनराजः भवितुं तु सर्वथाऽयोग्यः। राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः। अपि च स्वरक्षायामपि समर्थः नासि तर्हि कथमस्मान् रक्षिष्यसि?

अन्यः वानरः किं न श्रुता त्वया पञ्चतंत्रोक्तिः

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः।।

काकः आम् सत्यं कथितं त्वया-वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः।

पिकः (उपहसन्) कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि। न रूपम्, न ध्वनिरस्ति। कृष्णवर्णम् मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम्?

***शब्दार्थः* मिलित्वा** – मेलनं कृत्वा (मिलकर), **कथम्** – किमर्थम् (क्यों), **अस्मान्** – वयं (हम सब/सभी/हमारी), **वित्रस्तान्** – विशेषेण भीतान् (विशेषरूप से डरे हुओं को), **पीड्यमानां** – पीडितानां (पीड़ितों की), **परैः** – परेषां (दूसरों के), **कर्कश** – कटु (कड़वी), **मन्यामहे** – मन्यन्ते (मानते हैं), **कृतान्तःयमराजः** – मृत्यु का देवता-यमराज (जीवन का अन्त करने वाले)।

***अनुवाद* शेर!** (क्रोध से गर्जना करते हुए) अरे! मैं जंगल का राजा हूँ, क्या तुम्हें डर नहीं लगता? तुम सब मिलकर किसलिए मुझे तंग कर रहे हो?

एक बंदर अगर तुम जंगल के राजा हो तो सर्वथा अयोग्य हो। राजा तो रक्षक होता है, लेकिन आप तो भक्षक हो। और जब आप अपनी रक्षा करने में भी समर्थ नहीं हो तो हमारी रक्षा कैसे करोगे?

दूसरा बंदर क्या तुमने पञ्चतंत्र में जो कहा गया वह नहीं सुना जो विशेष रूप से डरे हुए और दूसरों के द्वारा पीड़ितों की रक्षा नहीं कर पाते हैं, वे जंतुओं के जीवन का अंत करने वाले होते हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

कौआ हाँ तुमने सत्य कहा है—वस्तुतः जंगल का राजा बनने के योग्य मैं ही हूँ।

कोयल (हँसते हुए) तुम कैसे वनराज बनने योग्य हो? यहाँ वहाँ का-का करके इस प्रकार कटु ध्वनि से वातावरण को गंदा करते हो। न रूप और न ही आवाज है। तुम काले रंग के हो और खाने योग्य और न खाने योग्य का भी भक्षण करते हो तो तुम किस प्रकार अपने आप को वनराज मान रहे हो?

3 **काकः** अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपानां अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्'—इति प्रकारेण। अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम्। अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते।

पिकः अलम् अलम् अतिविकत्थनेन। किं विस्मर्यते यत्—

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसंतसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

काकः रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः? अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।

***शब्दार्थः* अनृतम्** – न ऋतम्, अलीकम् (असत्य), **विश्वप्रथितम्** – जगति प्रथितम (विश्व प्रसिद्ध), **अतिविकत्थनम्** – आत्मश्लाघा (डींगे मारना), **पालयामि** – पोषयंति (पालन/पोषण करता), **करुणापरः** – दयापरः (दयालु)।

***अनुवाद* कौआ** अरे! अरे! क्यों जलती हो? यदि मैं काले रंग का हूँ, तो तुम क्या गोरे रंग की हो? और क्या तुम भी भूल गई कि मेरी सत्य प्रियता लोगों के लिए उदाहरणस्वरूप है, जो इस प्रकार है—'झूठ बोलोगे तो कौआ काटेगा'। हमारा परिश्रम और एकता विश्व प्रसिद्ध है। और भी कौए के समान चेष्टा रखने वाला विद्यार्थी ही आदर्श छात्र माना जाता है।

कोयल रुको-रुको ज्यादा डींगे मत मारो। क्या तुम भूल गए कि—

कौआ काला होता है और कोयल भी काली होती है फिर दोनों में क्या अंतर है। वसंत काल आने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि कौआ-कौआ होता है और कोयल-कोयल होती है।

कौआ अरे नीच! मैं यदि तुम्हारी संतान का पोषण नहीं करूँ तो कोयल कहाँ से हों? अतः मैं ही दयालु एवं करूणा करने वाला पक्षियों का राजा कौआ हूँ।

4 **गजः** समीपतः एवागच्छन् अरे! अरे! सर्वं संभाषणं शृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च। सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि, वन्यपशून् तु तुदन्तं जन्तुमहं स्वशुण्डेन पोथयित्वा मारयिष्यामि। किमन्यः कोऽप्यस्ति एतादृशः पराक्रमी:? अतः अहेमेव योग्यः वनराजपदाय।

वानरः अरे! अरे! एव वा (शीघ्रमेव गजस्यापि पुच्छं विधूय वृक्षोपरि आरोहति।) (गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोऽयितुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा अन्यं वृक्षमारोहति। एवं गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंहः अपि हसति वदति च।)

सिंहः भोः गज! मामप्येवमेवातुदन् एते वानराः।

वानरः एतस्मादेव तु कथयामि यदहमेव योग्यः वनराजपदाय येन विशालकायं पराक्रमिणं, भयंकरं चापि सिंहं गजं वा पराजेतुं समर्था अस्माकं जातिः। अतः वन्यजंतूनां रक्षायै वयमेव क्षमाः।

***शब्दार्थः* शृण्वन्नेवाहम्** – आकर्णयन् एव अहम् (सुनते हुए ही मैं), **पोथयित्वा मारयिष्यामि** – पीडयित्वा हनिष्यामि (क्लेश देकर मार डालूँगा), **विधूय** – आकर्ष्य (खींचकर), **आलोऽयितुम्** – पातयितुम् (गिराने के लिए), **मामप्येवमेवातुदन्** – माम अपि एव त्रस्तयति (मुझे भी परेशान किया)।

***अनुवाद* हाथी** पास आकर अरे! अरे! सभी की बातें सुनकर मैं यहाँ आया हूँ। मैं विशाल शरीर वाला, बलवान् और पराक्रमी हूँ। शेर हो या अन्य कोई भी वन्यजीव तंग करने पर मैं उसे अपनी सूँड में पकड़कर मार दूँगा। क्या अन्य कोई ऐसा पराक्रमी है? अतः मैं ही वनराज बनने के योग्य हूँ।

बंदर अरे! अरे! ऐसा ही हो (शीघ्र ही हाथी की भी पूँछ को खींचकर वृक्ष के ऊपर चढ़ जाता है।) (हाथी उस वृक्ष को ही अपनी सूँड से गिरा देना चाहता है, लेकिन बंदर कूदकर दूसरे वृक्ष पर चढ़ जाता है। इस प्रकार हाथी को एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष की ओर दौड़ते देखकर शेर भी हँसता है और कहता है)

शेर हे हाथी! मुझे भी इन्हीं बंदरों द्वारा तंग किया गया है।

बंदर इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि वनराज पद के योग्य मैं ही हूँ, क्योंकि जिसे विशालकाय, पराक्रमी और भयंकर शेर व हाथी भी पराजित करने में समर्थ नहीं हैं। अतः वन्यजीवों की रक्षा करने में हम ही सक्षम हैं।

5 (एतत्सर्वं श्रुत्वा नदीमध्यस्थितः एकः बकः)

बकः अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति। अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदकमलंकुर्वाणैः जंतुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि, अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

मयूरः (वृक्षोपरितः-साट्टहासपूर्वकम्) विरम विरम आत्मश्लाघायाः। किं न जानासि यत्—

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।।
को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वकाकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।

शब्दार्थः **नदीमध्यस्थितः** — सरिता मध्यतिष्ठति (नदी के बीच में स्थित), **भवितुमर्हति** — भवितुमशक्यते (हो सकता है), **अलंकुर्वाणै** — शोभयित्वा (अलंकृत करके), **साट्टहासपूर्वकम्** — अट्टहासेन सहितम् (ठहाका मारते हुए), **सम्यङ्नेता** — समानम् राक्तं/वृपं (ठीक राजा), **जलधौ** — सागरे (समुद्र में), **विप्लवेतेह** — अत्र निमज्जेत्, विशीर्येत (डूब सकती है), **नौरिव** — नौकायाः समानम् (नौका के समान)।

अनुवाद (यह सब सुनकर नदी के बीच स्थित एक बगुला)

बगुला अरे! अरे! मेरे अलावा कोई भी राजा कैसे हो सकता है। मैं तो ठंडे पानी में बहुत समय तक बिना विचलित हुए अपने ध्यान में मग्न होकर एक ही स्थान पर खड़े होकर सभी के रक्षा उपायों के विषय में सोचता हूँ और योजना बनाकर अपनी सभा विभिन्न पदों से अलंकृत करके जंतुओं से मिलकर रक्षा के उपायों को क्रियान्वित करता हूँ, अतएव मैं ही वनराज पद को प्राप्त करने योग्य हूँ।

मोर (वृक्ष के ऊपर से ठहाका मारते हुए) ठहरो ठहरो अपनी प्रशंसा करते हुए। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि—यदि प्रजा का नेता अर्थात् राजा (पालक) ही ठीक नहीं हो तो वह बिना नाविक के नौका के समान समुद्र में डूब सकती है।

कौन नहीं जानता तुम्हारी ध्यान अवस्था को? स्थितप्रज्ञ ऐसा कहकर बेचारी मछलियों को छलपूर्वक पकड़कर खा जाते हो। तुम पर धिक्कार है। तुम्हारे कारण तो संपूर्ण पक्षियों का कुल ही अपमानित होता है।

6 **वानरः** (सगर्वम्) अतएव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदायः। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः।

मयूरः अरे वानर! तूष्णीं भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः, अतः वने निवसन्तं मां वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना, यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथाकर्तुं क्षमः।

काकः (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक्। नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

मयूरः यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! पश्य! मम पिच्छानामपर्वूं सौंदर्यम् (पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्) न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः।

वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

शब्दार्थः **निवसन्तं** — वसन्तम् (रहते हुए), **वनराजरूपेणापि** — काननस्य नृप रूपे (वनराज के रूप में), **अहिभुक्** — सर्पभक्षक, **पिच्छानां** — पक्षानां (पंखों को), **उद्घाट्य** — पसार्य (फैलाकर/खोलकर), **जन्तुना** — प्राणिनां (जीवों के)।

अनुवाद **बंदर** (गर्व के साथ) अतः मैं कहता हूँ कि मैं ही वनराज पद के योग्य हूँ। शीघ्र ही सभी वन्य जीव मेरा राज्याभिषेक करने के लिए तैयार हो जाओ।

मोर अरे बंदर! चुप हो जाओ। तुम कैसे वनराज पद के योग्य हो? देखो-देखो मेरे सिर पर राजमुकुट की तरह शिखर स्थापित है विधाता ने ही मुझे पक्षिराज बनाया है। अतः वन में रहते हुए मुझे अब वनराज के रूप में भी सजा हुआ देख सकते हो, क्योंकि किस प्रकार कोई भी विधाता के निर्णय को टाल सकता है।

कौआ (व्यंग्य के साथ) अरे सर्पभक्षक! नृत्य के अतिरिक्त तुम्हारी और कोई विशेषता है जो तुम्हें हम सब वनराज पद के लिए योग्य मानें।

मोर मेरा नृत्य तो प्रकृति की आराधना है। देखो! देखो! मेरे पंखों की अपूर्व सुंदरता को (पंखों को फैलाकर नृत्य मुद्रा में स्थित) तीनों लोकों में मेरे समान सुंदर कोई भी नहीं है।

वन्य जीवों के ऊपर आक्रमण करने वालों को तो मैं अपने सौंदर्य और नृत्य से आकर्षित करके वन से बाहर निकाल दूगाँ। अतः मैं ही वनराजपद के योग्य हूँ।

7 (एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एवं विवादं श्रृणुतः वदतः च)

व्याघ्रचित्रकौ अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते? एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ। यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या।

सिंहः तूष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षको न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते। अतएव विचारविमर्शः प्रचलति।

बकः सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुतः एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।

सर्वे पक्षिणः (उच्चैः) आम् आम्-कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति। (परं कश्चिदपि खगः आत्मानं विना नान्यं कपि अस्मै पदा योग्यं चिन्तयन्ति तर्हि कथं निर्णयः भवेत् तदा तैः सर्वैः गहननिद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उलूकं वीक्ष्य विचारितम् यदेषः। आत्मश्लाघाहीनः पदनिर्लिप्तः उलूको एवास्माकं राजा भविष्यति। परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसंबधिनः संभाराः इति।)

शब्दार्थः **शिरसि** — मस्तके (सिर पर), **सम्यगुक्तम्** — सम्यक् कथितम् (ठीक कहा), **निश्चेतव्यम्** — निश्चयकर्तव्यम् (निश्चय किया जाना चाहिए।), **संशीतिलेशस्य** — सन्देहमात्रस्य (ज़रा से भी सन्देह की), **कश्चिदपि** — कोऽपि (कोई भी), **वीक्ष्य** — विलोक्य/दृष्ट्वा (देखकर), **आत्मश्लाघा** — आत्म प्रशंसाया (आत्मप्रशंसा), **पदनिर्लिप्तः** — पदस्य लोभः (पद का लाभ), **संभाराः** — सामग्र्यः (सामग्रियाँ)।

अनुवाद (इसी समय व्याघ्र और चीता भी नदी का जल पीने के लिए आते हैं और इस विवाद को सुनकर कहते हैं)

व्याघ्र और चीता अरे क्या वनराज पद के लिए श्रेष्ठ पात्र को चुना जा रहा है? इसके लिए तो हम दोनों ही योग्य हैं। सर्वसहमति से किसी का भी चयन कर लो।

शेर चुप रहो तुम! तुम दोनों भी मेरे समान ही भक्षक हो न कि रक्षक। ये वन्यजीव भक्षक को रक्षक पद के योग्य नहीं मानते हैं। अतएव विचार विमर्श चल रहा है।

बगुला सिंह महोदय ने सर्वथा ठीक ही कहा। वस्तुत: ही शेर ने बहुत समय तक शासन किया, परंतु अब तो कोई भी पक्षी ही राजा होगा ऐसा निश्चय किया जाना चाहिए, यहाँ तो जरा से भी सन्देह की गुजांइश नहीं है।

सभी पक्षी (जोर से) हाँ-हाँ कोई पक्षी ही वनराज (वन का राजा) होगा। (परन्तु कोई भी पक्षी अपने अलावा किसी को भी इस पद के योग्य नहीं मान रहा था तो कैसे निर्णय संभव होगा? फिर सभी ने गहन निद्रा में सोते हुए उल्लू को देखकर विचार किया कि अपनी प्रशंसा और पद के लोभ से रहित उल्लू ही हमारा राजा होगा। परस्पर विचार करके अपने राजा के अभिषेक संबंधित सामग्रियों को लेने चले गए।

8 सर्वे पक्षिण: सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव

काक: (अट्टहासपूर्णेन-स्वरेण) सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर-हंस-कोकिल-चक्रवाक-शुक-सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जा:। पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाण: एष: कथमस्मान् रक्षिष्यति। वस्तुतस्तु—

स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति।।

(तत: प्रविशति प्रकृतिमाता)

प्रकृतिमाता (सस्नेहम्) भो: भो: प्राणिन:। यूयम् सर्वे एव मे सन्तति:। कथं मिथ: कलहं कुर्वन्ति। वस्तुत: सर्वे वन्यजीविन: अन्योन्याश्रिता:। सदैव् स्मरत—

ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्-विधं प्रीतिलक्षणम्।।

शब्दार्थ: **करालवक्त्रस्य** — भयंकरमुखस्य (भयंकर मुख वाले का), **मिथ:** — परस्परम् (आपस में), **अन्योन्याश्रिता:** — परस्पराश्रिता (एक-दूसरे पर आश्रित), **गुह्यमाख्याति** — रहस्यं वदति (रहस्य कहता है)।

अनुवाद सभी पक्षी तैयारी करने के लिए जाना चाहते हैं तभी अचानक ही—

कौआ (ठहाका मारते हुए) यह सर्वथा ठीक नहीं है कि न मोर, न हंस, न कोयल, न चकवा, न तोता, न सारस आदि प्रधान पक्षियों में विद्यमान दिन के समय अंधे और भयंकर मुख वाले के अभिषेक के लिए सभी तैयारी। पूरे दिन जो सोता है, वह कैसे हमारी रक्षा करेगा। वस्तुत: स्वभाव से रौद्र (अति उग्र स्वभाव वाला) क्रूरता से युक्त और अप्रिय बोलने वाला ऐसे उल्लू को राजा बनाकर किसी का भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

(फिर प्रकृति माता प्रवेश करती है)

प्रकृति माता (स्नेह के साथ) हे हे प्राणियों! तुम सभी मेरी संतानें हो। कैसे आपस में कलह कर रहे हो। वस्तुत: सभी वन्य जीव एक-दूसरे पर आश्रित हैं। सदैव याद रखो—देना और पुन: वापस लेना, रहस्य बताना और पूछना, खाना और खिलाना ये छ: प्रकार के प्रीति (प्रेम) के लक्षण हैं।

9 (सर्वे प्राणिन: समवेतस्वरेण)

मात:! कथयति तु भवती सर्वथा सम्यक् परं वयं भवतीं न जानीम:। भवत्या: परिचय: क:?

प्रकृतिमाता-अहं प्रकृति: युष्माकं सर्वेषां जननी? यूयं सर्वे एव मे प्रिया:। सर्वेषामेव मत्कृते महत्त्वं विद्यते यथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्। तद्यथा कथितम्—

प्रजासुखे सुखं राज्ञ:, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हिं राज्ञ:, प्रजानां तु प्रियं हितम्।।

अपि च—

अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहित:।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते।।

अत: भवन्त: सर्वेऽपि शफरीवत् एकैकस्य गुणस्य चर्चां विहाय, मिलित्वा प्रकृतिसौंदर्याय वनरक्षायै च प्रयतन्ताम्।

सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति मिलित्वा दृढसंकल्पपूर्वकं च गायन्ति

प्राणिनां जायते हानि: परस्परविवादत:।
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।।

शब्दार्थ: **मोदध्वम्** — प्रसन्ना: भवत (तुम सब प्रसन्न हो जाओ), **अगाधजलसञ्चारी** — असीमितजलधारायां (अथाह जलधारा में संचरण-करने वाला), **रोहित:** — 'रोहित' नाम मत्स्य: (रोहित रोहू नामक बड़ी मछली), **अंगुष्ठोदकमात्रेण** — अंगुष्ठमात्रजले (अंगूठे के बराबर जल में अर्थात् थोड़े से जल में), **नात्मप्रियं** — नास्तिआत्म प्रिय (स्वयं के लिए प्रिय/हिताकरी नहीं है।), **अन्योन्यसहयोगेन** — परस्पर सहयोगन (एक-दूसरे का सहयोग करना से), **शफरी** — लघुमत्स्य: (छोटी सी मछली), **लाभस्तेषां** — तेषाम् लाभ: (उन्हें/उनको लाभ)।

अनुवाद (सभी प्राणी समान स्वर में) हे माता! तुम सर्वथा ठीक ही कहती हो, परंतु हम आपको नहीं जानते। आपका क्या परिचय है?

प्रकृतिमाता मैं प्रकृति तुम सबकी माता हूँ। तुम सभी मेरे प्रिय हो। सभी का ही मेरे लिए महत्त्व है। यथा समय तुम कलह में समय व्यर्थ मत बिताओ अपितु सभी मिलकर ही प्रसन्नतापूर्वक जीवन को रस से युक्त करो। इसीलिए कहा गया है—

प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है, प्रजा के हित में ही राजा का हित है। राजा के स्वयं के लिए कुछ भी हितकारी नहीं है, अपितु जो प्रजा के लिए है वही राजा के लिए भी कल्याणकारी है।

और भी—

अथाह जल में संचरण करने वाली रोहित नामक बड़ी मछली कभी गर्व नहीं करती है। जबकि जल में संचरण करने वाली अँगूठे के बराबर (अल्प) छोटी-सी मछली भी फुर-फुर की ध्वनि करती है।

अत: तुम सभी छोटी-सी मछली के समान एक-एक गुण की चर्चा को छोड़कर, मिलकर प्रकृति सौंदर्य और वन रक्षा के लिए प्रयत्न करो। सभी प्रकृतिमाता को प्रणाम करके मिलकर दृढ़ संकल्पपूर्वक गाते हैं

परस्पर (आपस में) विवाद करने से प्राणियों को हानि होती है और एक-दूसरे का सहयोग करने से उन्हें लाभ की प्राप्ति होती है। अतएव परस्पर विवाद नहीं करना चाहिए।

चैप्टर प्रैक्टिस

भाग 1

बहुविकल्पात्मका: प्रश्ना:

1. सिंहस्य पुच्छं क: धुनाति?
(क) मूषक: (ख) जम्बूक:
(ग) वानर: (घ) मयूर:
उत्तर (ग) वानर:

2. कीदृश: विद्यार्थी आदर्श छात्र: मन्यते?
(क) कर्मशील: (घ) कर्महीन:
(ग) आलस्ययुक्त: (घ) काकचेष्टा:
उत्तर (घ) काकचेष्टा:

3. सर्व सम्भाषणं श्रुत्वा क: आगच्छति?
(क) वानर: (ख) काक:
(ग) गज: (घ) सिह:
उत्तर (ग) गज:

4. विशालकाय:, बलशाली, पराक्रमी क: आसीत्?
(क) गज: (ख) काक:
(ग) कोकिल: (घ) वानर:
उत्तर (क) गज:

5. बक: कान् छलेन् क्रूरतया भक्षयसि?
(क) पशून् (ख) जनान्
(ग) वराकान् मीनान् (घ) एतेषां कोऽपि न
उत्तर (ग) वराकान् मीनान्

6. क: अहिभुक्?
(क) मयूर: (ख) काक:
(ग) गज: (घ) बक:
उत्तर (क) मयूर:

7. कस्य नृत्यं तु प्रकृते: आराधना?
(क) कोकिलस्य (ख) बकस्य
(ग) मयूरस्य (घ) सिहस्य
उत्तर (ग) मयूरस्य

8. 'त्रैलोक्ये मत्सदृश: सुन्दर: कोऽपि नास्ति' इति क: कथयति?
(क) मयूर: (ख) बक:
(ग) गज: (घ) कोकिल:
उत्तर (क) मयूर:

9. सर्वेषां जननी का?
(क) प्रकृतिमाता (ख) गौमाता
(ग) जननी (घ) कोऽपि न
उत्तर (क) प्रकृतिमाता

10. क: वानरस्योपरि क्रुद्ध: भवति?
(क) सिंह: (ख) गज:
(ग) गर्दभ: (घ) बक:
उत्तर (क) सिंह

11. कीदृश: सिंह: इतस्तत: धावति?
(क) बुभुक्षित: (ख) तुष्ट:
(ग) क्रुद्ध: (घ) तृषार्त:
उत्तर (क) क्रुद्ध:

12. अनृतं वदसि चेत् क: दशेत् ?
(क) काक: (ख) कोकिल:
(ग) बक: (घ) गज:
उत्तर (क) काक:

13. बक: कीदृशे जले तिष्ठति?
(क) ऊष्णे (ख) निर्मले
(ग) शीतले (घ) दूषिते
उत्तर (ग) शीतले

14. वृक्षोपरि स्थित्वा मयूर: कम् आत्मश्लाघाया: विरमति?
(क) गजम् (ख) बकम्
(ग) वानरम् (घ) मूषकम्
उत्तर (ख) बकम्

15. के समवेतस्वरेण कथयति?
(क) सर्वे प्राणिन: (ख) जना:
(ग) वृक्षा: (घ) कोऽपि न
उत्तर (क) सर्वे प्राणिन:

भाग 2

गद्यांश अधिकृत्य अवबोधनात्मक कार्यम्

अधोलिखितानां गद्यांशानां पठित्वा तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत।

(निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।)

1. वनस्य दृश्यं समीपे एवैका नदी वहति। एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनाति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढ़ः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (i) वनस्य समीपे का वहति?
   (ii) कः सुखेन विश्राम्यते?
   (iii) वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य कुत्र आरोहति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (i) क्रुद्धः सिंहः कं प्रहर्तुमिच्छति?
   (ii) हर्ष मिश्रितं कलरवं के कुर्वन्ति?
   (iii) ''क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति'' इत्यस्मिन् वाक्ये क्रिया पदं किम्?

2. **काकः** अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा ''अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्''–इति प्रकारेण। अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम्। अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते।

पिकः अलम् अलम् अतिविकत्थनेन किं विस्मर्यते यत्–

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसंतसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।

काकः रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः?

अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (i) काकस्य वर्णः कीदृशः?
   (ii) करुणापरः पक्षिसम्राट् कः?
   (iii) काकचेष्टः विद्यार्थी कीदृशः छात्रः मन्यते? **NCERT**

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (i) पिकस्य वर्णः कीदृशः भवति?
   (ii) पिकस्य सन्ततिं कः पालयति?
   (iii) 'आदर्श छात्रः' इत्यनयोः पदयोः विशेषण पदं किम्?

3. **गजः** समीपतः एवागच्छन् अरे! अरे! सर्वं सम्भाषणं शृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च। सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि, वन्यपशून् तु तुदन्तं जन्तुमहं स्वशुण्डेन पोथयित्वा मारयिष्यामि। किमन्यः कोऽप्यस्ति एतादृशः पराक्रमीः अतः अहेमव योग्यः वनराजपदाय।

वानरः अरे! अरे! एवं वा (शीघ्रमेव गजस्यापि पुच्छं विधूय वृक्षोपरि आरोहति।) (गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोऽयितुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा अन्यं वृक्षमारोहति। एवं गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंहः अपि हसति वदति च।)

सिंहः भोः गज! मामप्येवमेवातुदन् एते वानराः।

वानरः एतस्मादेव तु कथयामि यदहमेव योग्यः वनराजपदाय येन विशालकायं पराक्रमिणं, भयंकरं चापि सिंहं गजं वा पराजेतुं समर्था अस्माकं जातिः। अतः वन्यजंतूनां रक्षायै वयमेव क्षमाः।

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (i) सर्व सम्भाषणं श्रुत्वा कः आगच्छति?
   (ii) गजस्य पुच्छं विधूय वृक्षस्योपरि कः आरोहति?
   (iii) कः आत्मानं बलशाली, विशालकायः, पराक्रमी च कथयति? **NCERT**

II पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (i) गजः कीदृशः आसीत्?
   (ii) गजः वृक्षम् केन आलोऽयितुमिच्छति?
   (iii) 'गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोऽयितुमिच्छति' इत्यस्मिन् वाक्ये 'तं' इति सर्वनाम पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

4. (एतत्सर्वं श्रुत्वा नदीमध्यस्थितः एकः बकः)

बकः अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति। अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदकमलंकुर्वाणैः जन्तुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि। अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

मयूरः (वृक्षोपरितः-साट्टहासपूर्वकम्) विरम विरम आत्मश्लाघायाः। किं न जानसि यत्–

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।।

को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (i) कः स्थितप्रज्ञः?
   (ii) शीतल जले बहुकालपर्यन्तम् कः तिष्ठति?
   (iii) बकः कीदृशान् मीनान् क्रूरतया भक्षयति? **NCERT**

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (i) कस्य कारणात् सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्?
   (ii) बकः वन्यजंतूनां रक्षोपायान् कथं चिन्तयितुं कथयति? **NCERT**
   (iii) यदि राजा सम्यक् न भवति तदा प्रजा कथं विप्लवेत? **NCERT**

5. **मयूरः** (वृक्षोपरितः–साट्टहासपूर्वकम्) विरम, विरम, आत्मश्लाघायाः। किं न जानासि यत्–

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।

अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।।

को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।

वानरः (सगर्वम्) अतएव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः।

मयूरः अरे वानर ! तूष्णीं भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः अतः वने निवसन्तं मां वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना। यतः कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथा कर्तुं क्षमः?

काकः (सव्यङ्ग्यम्) अरे अहिभुक् ! नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।

CBSE Sample Paper 2020

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (*i*) कः सगर्वं वदति?
   (*ii*) नाट्यांशे कः श्लोकं वदति?
   (*iii*) 'अरे वानर ! तूष्णीं भव।' इति कः कथयति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (*i*) विधात्रा मयूरः कथं पक्षिराजः कृतः?
   (*ii*) काकः किं वदति?
   (*iii*) वानरः (सगर्वं) किं वदति?

6. (एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एवं विवादं शृणुतः वदतः च)

व्याघ्रचित्रकौ अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते? एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ। यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या।

सिंहः तूष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्शः प्रचलति।

बकः सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुतः एवं सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।

सर्वे पक्षिणः (उच्चैः) आम् आम्–कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति।

I. एकपदेन उत्तरत। *(एक पद में उत्तर दीजिए।)*
   (i) विवादं शृणुतः कौ आगतः?
   (ii) 'तूष्णीं भव' इति कः कथयति?
   (iii) भक्षकं कस्य पदस्य योग्यं न मन्यते?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। *(पूर्णवाक्य में उत्तर दीजिए।)*
   (i) केन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम्?
   (ii) सर्वे पक्षिणः उच्चैः किम् कथयन्ति?
   (iii) 'कश्चित् खगः एवं वनराजः भविष्यति' अत्र क्रियापदं किम्?

7. निम्न श्लोकान् पठित्वा मञ्जूषातः उचितपदेन अन्वय पूर्तिः कुरुत। *(निम्न श्लोकों को पढ़कर मञ्जूषा के उचित शब्द से अन्वयःपूर्ति कीजिए।)*

I. काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेद पिककाकयोः।
   वसंतसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।।
   अन्वयः काकः (i) ..... पिकः (अपि) (ii)..... पिककाकयोः (iii) ..... भेदः? (iv) ..... प्राप्ते काकः काकः पिकः (च) पिकः (भवति)।

   मञ्जूषा कृष्णाः कः, कृष्णाः, वसंतसमये।

II. प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
   नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्।।
   अन्वयः राज्ञः (i) ..... प्रजासुखे (ii) ..... च हिते हितम् (iii) ..... न आत्म प्रियं हितम् प्रजानां तु (iv) ..... हितम्।

   मञ्जूषा प्रजानां, सुखं, प्रियं, राज्ञः।

8. अधोलिखितं श्लोकस्य भावार्थम् मञ्जूषायाः उचितपदैः पूरयत। *(निम्नलिखित श्लोक का भावार्थ मञ्जूषा के उचित शब्दों से पूरा कीजिए।)*

I. प्राणिनां जायते हानिः परस्परंविवादतः।
   अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते।।

भावार्थः परस्परं (i) ..... प्राणिनां (ii) ..... जायते अन्योन्य (iii) .....तेषां (iv) .....प्रजायते।

मञ्जूषा सहयोगेन, लाभः, विवादतः, हानि।

9. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं पुनः लिखत। *(निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रमानुसार पुनः लिखिए।)*

(i) अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति।
(ii) एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजंतून् दृष्ट्वा सिंहः पृच्छति।
(iii) एकः सिंह सुखेन विश्राम्यते।
(iv) क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति च।
(v) एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनाति।
(vi) पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशी दशां दृष्ट्वा हर्ष मिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।
(vii) क्रुद्ध सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढ़ः।
(viii) सिंहः किमपि कर्तुं असमर्थः एव तिष्ठति।

उत्तराणि

1. I. *(i)* नदी *(ii)* सिंहः *(iii)* वृक्षोपरि
II. *(i)* क्रुद्ध सिंहः वानरं प्रहर्तुमिच्छति।
(ii) विविधाः पक्षिणः हर्षं मिश्रित कलखं कुर्वन्ति।
(iii) ''क्रुद्धः सिंह इतस्ततः धावति'' इत्यस्मिन् वाक्ये क्रिया पदं 'धावति' अस्ति।

2. I. *(i)* कृष्णः *(ii)* काकः *(iii)* आर्दशच्छात्रः
II. *(i)* पिकस्य वर्णः कृष्णः भवति।
(ii) पिकस्य संतति काकः पालयति।
(iii) ''आदर्श छात्रः'' इत्यनयोः पदयोः विशेषण पदं 'आदर्श' अस्ति।

3. I. *(i)* गजः *(ii)* वानरः *(iii)* गजः
II. *(i)* गजः स्वशुण्डेन वृक्षमालीडचितुमिच्छति।
(ii) 'निर्बलः' इति पदस्य कृते विलोम पदं 'बलशाली' प्रयुक्तम्।
(iii) 'तं' इति सर्वनाम् पदं वानराय प्रयुक्तम्।

4. I. *(i)* बकः *(ii)* बकः *(iii)* वराकान्
II. *(i)* बकस्य कारणात् सर्वं पक्षिकुलमेवाक्यमानितं जातम्।
(ii) बकः कथयति यत् अहं शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञः इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निमीर्य च स्वसभायां विविधपदमलंकुर्वाणैः जंतुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारिष्यामि।
(iii) तदा प्रजा अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।

5. I. (*i*) वानरः (*ii*) मयूरः (*iii*) मयूरः
II. (*i*) शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधाता एव मयूरः पक्षिराजः कृतः।
(*ii*) काकः (सव्यङ्ग्यम्) - ''अरे अहिभुक्! नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।'' इति वदति।
(*iii*) वानरः (सगर्वं) ''अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः'' इति कथयति।

6. I. *(i)* व्याघचित्रकौ *(ii)* सिंहः *(iii)* रक्षकस्य
II. *(i)* सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम्।
(ii) सर्वे पक्षिणः उच्चैः कथयति यत् कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति।
(iii) ''कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति'' अत्र क्रिया पदं गद्यांशे 'भाविष्यति' अस्ति।

7. I. *(i)* कृष्णः *(ii)* कृष्णः
(iii) <u>कः</u> *(iv)* वसंतसमये
II. *(i)* सुखं *(ii)* प्रजानां
(iii) राज्ञः *(iv)* प्रियं

8. I. *(i)* विवादतः *(ii)* हानि
(iii) सहयोगेन *(iv)* लाभः

9. I. *(iii)* एकः सिंह सुखेन विश्राम्यते।
(v) एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनाति।
(vii) क्रुद्ध सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढ़।
(i) अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति।
(iv) क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति च।
(viii) सिंहः किमपि कर्तुं असमर्थः एव तिष्ठति।
(vi) पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशी दशां दृष्ट्वा हर्ष मिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।
(ii) एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजंतून् दृष्ट्वा सिंहः पृच्छति।